

समग्र क्रांति हेतु युवाओं की तैयारी



समग्र क्रांति हेतु युवाओं की तैयारी



संकलन-संपादन
विचारक्रांति अभियान



प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मूल्य : ९.०० रुपये

दो शब्द !

वसंत आगमन के साथ प्रकृति अँगड़ाई लेकर उत्साह, उमंग और उल्लास प्रदर्शित करती है। वृक्षों की नवकलिकाएँ प्रस्फुटित होकर नवपल्लवों एवं पुष्पों से प्रकृति का शृंगार करती हैं। मानव-जीवन की अवधि भी शिशु, बालक, किशोर, युवा, वयस्क, प्रौढ़ एवं वृद्ध अवस्थाओं में विभाजित की गई है। युवावस्था जीवन का वसंतकाल है। इस अवस्था में शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ विचारों एवं भावनाओं में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। परिवर्तन के ये क्षण भावी जीवन को सुधारने और बिगाड़ने दोनों का कार्य कर सकते हैं। इस संक्रमण काल में युवाओं को सही दिशा, मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है, ताकि राष्ट्र की युवाशक्ति दिग्भ्रमित न हो। वह विध्वंस में न लगकर सृजन में लगे। यह पुस्तक इसी उद्देश्य की पूर्ति करेगी और युवाशक्ति को युग के सृजन में नियोजित करेगी। आत्मीय पाठक बंधुओं से निवेदन है कि इस पुस्तक की अधिकाधिक प्रतियाँ मँगाकर युवा वर्ग में पहुँचायी जाएँ।

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, मथुरा

आज की परिस्थितियाँ और युवा

समाज एवं राष्ट्र के नवनिर्माण में सदा से ही युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक युवाओं के योगदान से न सिर्फ समाज में समय-समय पर सकारात्मक बदलाव आते रहे हैं, अपितु राष्ट्र को भी नई दिशा मिलती रही है। वर्तमान समय में जब परिवार, समाज एवं राष्ट्र की धुरी लड़खड़ा रही है, संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक हो गया है, युवाओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करना आवश्यक समझा गया है।

जिस युवा पीढ़ी के कंधों पर देश का भविष्य सँवारने की महती जिम्मेदारी है, उसकी ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में ही लगे, विध्वंसकारी गतिविधियों में खर्च न हो, ऐसा प्रयास होना चाहिए। कुछ समय पहले तक देश की युवा पीढ़ी को ऊर्जावान, विचारशील, कल्पनाशील एवं जुझारू माना जाता था। उसके इन्हीं गुणों के आधार पर उम्मीद की जाती थी कि वह समझदार, सक्षम प्रतिस्पर्द्धा में टिकने वाली और सकारात्मक दृष्टिकोण वाली होगी। उम्मीदों के विपरीत आज युवा पीढ़ी निराश, कुंठाग्रस्त, आक्रोश की भावना से ग्रस्त, अपने भविष्य के प्रति आशंकित एवं अनिश्चित नजर आती है। युवाओं के चेहरे पर ये मनोभाव कहीं भी आसानी से पढ़े जा सकते हैं।

एक समय था जब गाँधी, सुभाष, लेनिन, विवेकानंद एवं दयानंद जैसे उच्च चरित्र से परिपूर्ण व्यक्तित्व युवाओं के आदर्श हुआ करते थे। समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए हर युवा तत्पर रहता था, परंतु आज समाज को कुछ देने के बजाय स्वयं रख लेना उसे ज्यादा रुचिकर लगने लगा है। उच्च आदर्श एवं नैतिकता

सिर्फ किताबी बातें बनकर रह गई हैं। भौतिक-मूल्यों के सामने जीवन-मूल्यों को पूरी तरह से भुला दिया गया है। हर युवक एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में अपनी नैतिक जिम्मेदारियों तक से विमुख होता जा रहा है।

पिछले पचास वर्षों में कुशासन एवं भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और सामाजिक कुरीतियों से लोहा लेने वाली युवा शक्ति की हुंकार कहीं खो-सी गई लगती है। आज युवाओं के मन-मस्तिष्क में राष्ट्र की कोई परिकल्पना संभवतः है ही नहीं, है भी तो आधी-अधूरी। ऐसे में उसका एकमात्र स्वप्न होता है, उच्च डिग्रियाँ प्राप्तकर विदेशों में जाकर पैसा कमाना। विभिन्न सर्वेक्षण रिपोर्टों के अनुसार ऐसे युवा ही देशी संस्थाओं एवं देश की सर्वाधिक आलोचना करते हैं, क्योंकि पश्चिम के बिना उन्हें अपना अस्तित्व ही अधूरा लगता है।

इसके कारण भी स्पष्ट हैं। अशिक्षा, बेरोजगारी एवं गरीबी में उलझा युवा अंतर्मन इन सबसे ऊब चुका है। इन समस्याओं का सामना करने की अपेक्षा इनसे पलायन उसे ज्यादा सहज लगता है। नई आर्थिक-औद्योगिक नीति एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी युवाओं के बीच व्यक्तिवादी चिंतन-पद्धति को प्रभावी रूप से विकसित किया है। युवाओं का एक वर्ग वह भी है, जो आधुनिकता के नाम पर पश्चिम की संस्कृति का शिकार बना है। इस संस्कृति ने भारतीय समाज में पैसे के महत्त्व को बढ़ाकर आदमी का महत्त्व घटा दिया है। यौन उच्छृंखलता, अपराध एवं ग्लैमर की मृग-मरीचिका में डूबा यह युवा वर्ग बुनियादी समस्याओं तक से अनभिज्ञ है। भोग-विलास की इस संस्कृति ने युवाओं को परिवार, समाज, एवं राष्ट्र के प्रति गैर जिम्मेदार बना दिया है।

राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो की नवीनतम रिपोर्ट भी युवाओं में बढ़ रही आपराधिक एवं नशे की प्रवृत्ति की पुष्टि करती है। मानसिक अशांति एवं बेरोजगारी से त्रस्त युवा नशे में डूबकर जीवन के

यथार्थ को भूल जाना चाहता है। प्रारंभ में तो नशा राहत प्रदान करता है, परंतु धीरे-धीरे इसका परिणाम गंभीर होता चला जाता है। नशे के साथ ही युवा अन्य दूसरी बुराइयों जैसे—चोरी, हिंसा आदि का शिकार हो जाता है और समाज की मुख्य धारा से कटता चला जाता है।

युवाओं के इस पतन के लिए देश की राजनीतिक व्यवस्था बहुत हद तक जिम्मेदार है। धर्म, जाति, भाषा एवं क्षेत्र के नाम पर युवाओं को पथ-भ्रमित कर उनका गलत इस्तेमाल करना, यहाँ की राजनीति का एक अभिन्न अंग बन चुका है। युवा शक्ति के सहारे सत्ता प्राप्त करने के बाद वे राजनीतिक दल ही बाद में विभिन्न मंचों से युवाओं को राजनीति से दूर रहने की सलाह भी देते हैं।

कभी भारतीय शिक्षा से यहाँ के युवाओं का चरित्र निर्माण होता था। अपने-आपको समझने का ज्ञान प्राप्त होता था, परंतु आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र येन-केन-प्रकारेण डिग्री हासिल करना ही रह गया है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के स्वरूप में आमूल-चूल परिवर्तन की बात अवश्य की जाती है, किंतु शिक्षा से संबंधित जो कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं, वे इसी शिक्षा-पद्धति को और ज्यादा मजबूत करते हैं। आजादी से पूर्व अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने शिक्षा को संस्कार का आधार मानकर शिक्षितों में आत्मविश्वास जाग्रत करने का प्रयास किया था। आज उन प्रयासों को इस हद तक विस्मृत किया जा चुका है कि शिक्षण संस्थाओं में अब नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

आज युवा वर्ग अपने पाठ्यक्रम में बहुत-से नए विषय पढ़ रहे हैं। नए वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। विभिन्न नए सांस्कृतिक एवं सामाजिक तौर-तरीकों का असर भी उन पर तेजी से हो रहा है, जो उनके लिए बेहद आकर्षक भी है। महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों को पाठ्य पुस्तकों से निकालकर कर्तव्य, बहादुरी,

ईमानदारी एवं त्याग से शून्य पाठ्यक्रम युवा मन को आदर्शों से दूर ही ले जाएँगे। इन परिस्थितियों में युवा वर्ग का भ्रमित हो जाना स्वाभाविक है।

एक आदर्श की तलाश सबको होती है और यह स्वाभाविक है कि सबसे पहले इसकी खोज अपने घर-परिवार एवं आस-पास के माहौल से शुरू होती है। ऐसे में उनके सामने अभिभावकों एवं परिचितों द्वारा दोहरा मूल्य अपनाया जाना, कथनी एवं करनी में भिन्नता, युवा संवेदनशील हृदय को बहुत गहरी चोट दे जाती है। ऐसा नहीं है कि आज का युवा जूझारू नहीं है या वह परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता और हिम्मत नहीं रखता। वस्तुतः वह पहले के युवाओं से अधिक प्रभावशाली ढंग से अपने कार्य को कर सकता है। आवश्यकता बस उसके सामने सच्चे आदर्श प्रस्तुत करने की है।

शासकीय स्तर पर भी इस समय एक ऐसी राष्ट्रीय युवा नीति और उस पर अमल की जरूरत है, जो दिग्भ्रमित हो गई युवा पीढ़ी को फिर से उसके सही लक्ष्य की ओर उन्मुख कर सके। एक ऐसी नीति जो युवाओं की ऊर्जा को नकारात्मक गतिविधियों में बरबाद होने से बचाए, उसे सकारात्मक-रचनात्मक कार्यों में खर्च करने को प्रेरित करे। संवेदनाओं से लबालब भरे युवा मन की सिर्फ कमियों पर ध्यान देने की बजाय इसकी समस्याओं पर भी पूर्वाग्रह से मुक्त होकर विचार किया जाना चाहिए।

युवावस्था मानव जीवन का वसंतकाल होता है। यह ऐसा समय होता है, जब विधाता की दी हुई सारी शक्तियाँ सहस्रधारा बनकर फूट पड़ती हैं। जब हर मन उमंग एवं उत्साह से परिपूर्ण होता है, कुछ कर दिखाने की चाहत होती है। आज भी राष्ट्र युवाचेतना के उन स्वरो को खोज रहा है, जिनसे समग्र क्रांति एवं नए इतिहास की रचना का गान प्रस्फुटित होगा। □

नई और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष

इस संक्रमणकाल में जब कि नई और पुरानी पीढ़ी एक साथ समानांतर रूप से चल रही है, दोनों में सामंजस्य, एकता, परस्पर सहयोग, स्नेह, सौहार्द का वातावरण बनाना आवश्यक है। इसके लिए दोनों पक्षों को अपने-अपने दृष्टिकोण में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करना ही पड़ेगा। पुरानी पीढ़ी को समय के अनुसार अपने आपको ढालना होगा और नई पीढ़ी को एक सीमा तक अपनी इच्छानुसार रहन-सहन अपनाने की छूट भी देनी होगी। नई पीढ़ी के जीवन जीने के तौर-तरीकों में अनावश्यक हस्तक्षेप भी न किया जाए। खासकर व्यक्तिगत जीवन की बातों में तो जहाँ तक बने ध्यान ही नहीं देना चाहिए। जहाँ नई बहुओं के जीवन की छोटी-छोटी बातों पर टीका-टिप्पणी की जाती है, आलोचनाएँ होती हैं, उनके जीवन की स्वाभाविक बातों, मानवीय अधिकारों पर चोट की जाती है, तो सहज ही संघर्ष और कलह एवं अशांति की आग भड़क उठती है।

नई पीढ़ी के युवक-युवतियों को भी वृद्धजनों के प्रति अपने कर्तव्य, उत्तरदायित्व, आदरभाव, अनुशासन के लिए सतर्क और सावधान रहना चाहिए। थोड़े-बहुत शाब्दिक ज्ञान, दिमागी विकास के बल पर गर्व करके वृद्धजनों के लंबे अनुभवों, व्यावहारिक जीवन की ठोस शिक्षा के प्रति उपेक्षा नहीं बरतनी चाहिए। आदर और अनुशासन के द्वारा वे वृद्धजनों के अनुभव, व्यावहारिक ज्ञान से जीवन में अधिक उन्नत हो सकते हैं। आदर-सत्कार, अनुशासन और सहिष्णुता के द्वारा वे वृद्धजना का हृदय सहज ही जीत सकते हैं। नई सभ्यता जो अभी मानव-जीवन के व्यावहारिक-क्रियात्मक पहलू पर ठीक-ठीक नहीं उतर पाई है, उसके बाह्य ढाँचे पर मोहित होकर पुरातन व्यवस्था, नियम-मर्यादाओं को उखाड़ फेंकना बड़ी भूल होगी। असुरक्षा और अनिश्चितता का रास्ता पकड़ना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। पुरातन का सहयोग लेकर, उसके

तथ्यों की कसौटी पर नवीन को कसकर उसे उपयोगी बनाने का काम पूरा होने पर ही उसे छोड़ा जा सकता है। इसी काम की जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर है और वह है पुरातन और नवीन के संयोग से उपयुक्त पथ का निर्माण करना।

संघर्ष का सरल समाधान समन्वय है। 'ले' और 'दे' की समझौतावादी नीति से क्लेश-कलहपूर्ण अनेक गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं। थोड़ा-थोड़ा दोनों झुकें तो मिलन का एक केंद्र सहज ही मिल जाता है। नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं का मूल्य और महत्त्व समझना चाहिए, जिससे शिष्टता, सभ्यता और सामाजिक सुरक्षा की बहुमूल्य मर्यादाओं में रहते हुए उसे शांति व्यवस्था और प्रगति का समुचित अवसर प्राप्त होता रहे। इसके साथ-साथ पुरानी पीढ़ी को भी बच्चों के स्वभाव, चरित्र पर ही विशेष ध्यान देना चाहिए। पहनने-ओढ़ने में वे आधुनिक तरीके अपनाते हैं तो उन पर इतना नियंत्रण भी नहीं करना चाहिए, जिससे वे विरोधी, विद्रोही, उपद्रवी या अवज्ञाकारी के रूप में सामने आएँ। इस विषय में थोड़ी ढील छोड़ना ही बुद्धिमानी है।

स्वभाव, विचार, परंपराओं की आस्था, दृष्टिकोण के साथ-साथ पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष का एक कारण मानव जीवन में बढ़ती हुई संकुचितता, संकीर्णता भी मुख्य है। विज्ञान के साथ-साथ मनुष्य की गति दूर-दूर तक संभव हुई, किंतु उसी अनुपात में उसका हृदय संकुचित और संकीर्ण बन गया। नई पीढ़ी की वृत्ति अपने लाभ तक सीमित होने लगी है, अपना सुख, अपना आराम, अपना लाभ। अपनेपन और अपने लाभ को प्रमुखता देने वालों के लिए असमर्थ, जराजीर्ण, अकर्मण्य, वृद्धजनों का पड़े-पड़े चारपाई तोड़ना अच्छा नहीं लगता। रोगग्रस्त, अंधा, अपाहिज हो जाने पर तो वृद्धजनों का जीवन और भी कठिन हो जाता है। बेटे-बहुओं द्वारा होने वाला तिरस्कार, निरादर कुछ कम कष्टकारक नहीं होता। उधर वृद्धजन भी मानसिक शिथिलतावश,

चिड़चिड़ाहट युक्त आलोचना, यहाँ तक कि गाली-गलौज से पेश आते हैं। अधिकांश घरों में यह संघर्ष चलता रहता है। वृद्धजन एवं पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी के लिए सरदरद बने हुए हैं, उन्हें जीवन निर्वाह की चिंता भी है।

इसके निवारण के लिए दोनों पक्षों को विवेकयुक्त कदम उठाने चाहिए। जिन्होंने अपना सर्वस्व लुटाकर प्यार-दुलार के साथ नई पीढ़ी के निर्माण में योग दिया, उन वृद्धजनों को चाहे वे जरावस्थावश किसी भी हालत में हों, देवताओं की तरह सेवा-पूजा करके उन्हें संतुष्ट रखना चाहिए। उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना, उन्हें स्वयं कष्ट सहकर भी पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिए। ऋषियों ने 'मातृ देवो भव' 'पितृ देवो भव' 'आचार्य देवो भव' का संदेश इसी अर्थ में दिया होगा। दूसरी ओर वृद्धजनों को भी जीवन में ऐसी तैयारी करनी चाहिए, जिससे वे नई पीढ़ी के लिए भार रूप तिरस्कार का कारण न बनें, वरन अपने जीवन की ठोस अनुभव युक्त शिक्षा, योग्यता से नई पीढ़ी को जीवन यात्रा का सही-सही मार्ग दिखाएँ। वानप्रस्थ और संन्यास का विधान इसीलिए रखा गया था। इसमें पुरानी पीढ़ी नई को अपने ज्ञान-अनुभवों से मानव मात्र को सही शिक्षा देकर, सदज्ञान की प्रेरणा देकर उन्नति एवं कल्याण की ओर अग्रसर करती रही है। घर में पड़े-पड़े चारपाई तोड़ना, बेटे-बहुओं के वाक्य दंशों से पीड़ित होना, उनके स्वतंत्र जीवन में रोड़ा बनकर खटकते रहना, मोह में ग्रस्त होकर दिनोंदिन बच्चों में लिपटना मानव जीवन की उत्कृष्ट स्थिति वृद्धावस्था का अपमान करना है। इससे जीवन में दुःख, अशांति, उत्कृष्टता का कोई रास्ता है तो वही है, जो हमारे पूर्व मनीषियों ने सुझाया था। घर के बंधन, स्वजनों के मोह, आसक्ति, वस्तुओं के आकर्षण से मुक्त होकर वानप्रस्थ या संन्यास का जीवन बिताना और अपने अनुभव, ज्ञान, योग्यता से जन-समाज को सही-सही रास्ता दिखाना, इसी में पुरानी पीढ़ी के जीवन का सदुपयोग है।

युवको, उठो !

युवको ! तुम हो युग निर्माता, तुम ही सब कुछ कर सकते हो।
तुम ही दुनिया को चाहो तो सुख-सौरभ से भर सकते हो ॥
अतुल वैभव के दाता तुम हो, जग को सब कुछ दे सकते हो।
भुज-दंडों की पतवारों से युग की तरणी खे सकते हो।
आज परीक्षा है साहस की, युग तुमसे अनुदान माँगता।
युवको उठो, आज युग तुम से युवा शक्ति अभियान माँगता ॥

रूढ़िवाद की परंपराओं से तुमको टकराना होगा।
जीर्ण-शीर्ण मत-मतांतरों से अपना पिंड छुड़ाना होगा ॥
जन-जीवन में नव-जीवन के तुम ही प्राण फूँक सकते हो।
नव युग के निर्माण कार्य में यश के भागी हो सकते हो ॥
इसीलिए संसार आज है, यौवन की पहचान माँगता।
युवकों ! उठो, आज युग तुमसे युवा शक्ति अभियान माँगता ॥

तुम बदलो तो युग बदलेगा, इसमें तो संदेह नहीं है।
प्रभु का अटल विधान यही है, यह भी निस्संदेह सही है ॥
हाँ, तुमको ही अब नव युग के अग्रदूत बन जाना होगा।
यही धर्म है आज तुम्हारा, इसको अवश्य निभाना होगा ॥
आज समय की यही माँग है, महाकाल भी दान माँगता।

युवकों ! उठो, आज युग तुमसे युवा शक्ति अभियान माँगता ॥
तुम आँधी से लड़ सकते हो, तूफ़ाँ से टकरा सकते हो।
तुम जीवन-संगीत मृत्यु के घर में, घुसकर गा सकते हो ॥
तुम साहस के पुतले, साहस किस में जो तुमको ललकारे।
इस धरती को स्वर्ग बनाने की क्षमता तुम में है प्यारे ॥
तुम नवयुग के वरदानी हो, युग तुमसे है वरदान माँगता।
युवकों ! उठो, आज युग तुमसे युवा शक्ति अभियान माँगता ॥

—रामकुमार भारतीय

युवक सज्जनता और शालीनता सीखें

आज कुछ ऐसी गंदी हवा चल रही है, जिसने नई पीढ़ी को उद्धत एवं उच्छृंखल बनाने की विभीषिका खड़ी कर दी है। हमारे होनहार बच्चों में से अधिकांश में उच्छृंखलता, अवज्ञा, उद्दंडता, अनुशासनहीनता की मात्रा बहुत बढ़ती चली जा रही है, यह चिंता की बात है। इसमें देश के दुर्भाग्य का खतरा छिपा हुआ है। परस्पर छुरेबाजी, अध्यापकों की अवज्ञा, परीक्षा में नकल, बिना टिकट यात्रा, लड़कियों से अभद्रता, सिनेमा की शौकीनी, शृंगार-सजावट की फिजूलखरची, उद्धत आचरण, वार्तालाप में विनय एवं शिष्टता का अभाव आदि कितने ही दुर्गुण अपने होनहार बालकों में देखते हैं तो भारी चिंता होती है कि इतने उथले व्यक्तित्व को लेकर वे किस प्रकार अपने भविष्य को उज्ज्वल और अगले दिनों जो जिम्मेदारी उनके कंधों पर आने वाली है, उसका निर्वाह किस प्रकार कर पाएँगे।

जो नवयुवक अपना भला-बुरा समझने की स्थिति में नहीं हैं, उन्हें गिरह बाँध लेनी चाहिए कि सभ्य समाज के जिम्मेदार नागरिक हमेशा अपने व्यक्तित्व को तेजस्वी बनाने के लिए सद्गुणों को अपने स्वभाव में निरंतर सम्मिलित करते रहते हैं। शिष्टता ही लोकप्रिय बनाती है। अनुशासनप्रिय व्यक्ति के अनुशासन में ही दूसरे लोग रहते हैं। सज्जनों को ही श्रद्धा मिलती है। सद्गुणी दूसरों का हृदय जीतते हैं और दसों दिशाओं में उन पर स्नेह, सहयोग बरसता है। इस राजमार्ग को जिसने भी अपनाया, उसे ही मनस्वी, तेजस्वी और यशस्वी बनने का अवसर मिला है और जो दुष्टता के दुर्गुणों में ग्रस्त हो गए, वे थोड़े समय औरों को आतंकित करके, क्षणिक रोब-दाब जमा सकते हैं और डरा-धमकाकर कुछ सीमा तक उल्लू सीधा कर सकते हैं, पर यह तनिक-सी सफलता अंततः बहुत मँहगी और भारी पड़ती है। लोगों की निगाह में जब

व्यक्तित्व गिर गया और गुंडा या उपद्रवी माना जाने लगा तो समझना चाहिए कि सम्मान और सहयोग की स्थिति समाप्त हो गई। जीवन में प्रगति और शांति के लिए दूसरों की सद्भावना और सहायता की जरूरत पड़ती है, पर यह दोनों ही अनुदान केवल सज्जनों को मिलते हैं। आतंकवादी और उद्धत व्यक्ति किसी के हृदय में अपने लिए स्थान न बना सकेंगे। उनके लिए सबके भीतर घृणा और अविश्वास भरा रहता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकते और न उन्हें कोई बड़ी सफलता ही मिलती है।

हमारे नवयुवकों को समझना चाहिए कि ध्वंसात्मक दुष्प्रवृत्तियों को, अशिष्टता एवं उच्छृंखलता को अपना लेना अति सरल है। छिछोरा साथी अथवा उद्धत अगुआ लोग उठती आयु के भोले युवाओं को आसानी से गुमराह कर सकते हैं, पर शालीनता और सज्जनता का अभ्यास कराना उनके बस की बात नहीं। इसलिए हेय व्यक्तित्व के जोशीले और उच्छृंखल लोगों को अपने ऊपर हावी ही नहीं होने देना चाहिए। उनके प्रभाव और सान्निध्य से दूर रहना चाहिए, अन्यथा उनकी मैत्री अपने को उच्छृंखल बना देगी और वह स्थिति पैदा कर देगी, जिसमें अपनी निज की और दूसरों की आँखों में अपना व्यक्तित्व गया-गुजरा, ओछा, कमीना और निकृष्टस्तर का बन जाए। इस स्थिति में जो पड़ा, उसके सौभाग्य का सूर्य एवं उज्ज्वल भविष्य अस्त हो गया ही समझना चाहिए।

सभ्य, समुन्नत देशों के नवयुवक अपने राष्ट्रों की स्थिरता एवं प्रगति में भारी योगदान दे रहे हैं। उनकी प्रवृत्तियाँ रचनात्मक दिशा में लगी हैं। अध्ययन में गंभीर रुचि लेकर वे अपनी योग्यता बढ़ाते हैं, ताकि अवसर आने पर अपनी प्रतिभा को किसी भी कसौटी पर खरी सिद्ध कर सकें। एक हम हैं कि जिनके बच्चे हर कहीं सिरदरद होते हैं। अभिभावक रुष्ट,

अध्यापक दुःखी, साथी क्षुब्ध, स्वयं उद्विग्न। इन सबका एक ही कारण है—दुर्गुणों की मात्रा बढ़ जाना। बुखार बढ़ने की तरह मर्यादाओं का उल्लंघन करने की प्रवृत्ति का बढ़ना भी खतरनाक है। अपने बच्चों के उद्धत आचरण देखकर हम दुःख, पश्चात्ताप और दुर्भाग्य की कल्पना करते रहें, यह स्थिति हम सबके लिए लज्जाजनक है। जो भी हो हमें अपने बच्चों को समझाने और सिखाने का हर कडुआ-मीठा उपाय करना चाहिए ताकि वे सज्जन, शालीन, परिश्रमी और सत्यथगामी बनें, इसी में उनका और हम सबका कल्याण है। □

रावण वध, लंका विजय,
 कंस के आतंक का नाश, बुद्ध
 का धर्म-चक्र प्रवर्तन, गाँधी का
 सत्याग्रह—स्वतंत्रता आंदोलन,
 आचार्य शंकर की धर्मस्थापना,
 विवेकानंद का दिग्विजयी
 अभियान वेदांत-प्रचार आदि
 महामानवों/अवतारों के
 युवाकाल की उपलब्धियाँ
 रही हैं।

युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद का संदेश

युवको! तुम बलवान बनो, (शरीर से, मन से, आत्मा से)। दुःख भोग का एकमात्र कारण दुर्बलता है। हम दुखी हो जाते हैं, तरह-तरह के अपराध करते हैं, क्योंकि हम दुर्बल हैं। हम दुःख भोगते हैं, क्योंकि हम दुर्बल हैं। जहाँ हमें दुर्बल कर देने वाली कोई चीज नहीं, वहाँ न मृत्यु है और न दुःख है।

बल ही एक मात्र आवश्यक संपदा है। बल ही भवरोग की एकमात्र दवा है। धनिकों द्वारा रौंदे जाने वाले निर्धनों के लिए बल ही एकमात्र दवा है। विद्वानों द्वारा दबाए जाने वाले अज्ञानों के लिए भी बल ही एकमात्र दवा है। हम काफी रो लिए, अब और रोने की आवश्यकता नहीं। अब अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो। हम मनुष्य बनाने वाला धर्म ही चाहते हैं, हम मनुष्य बनाने वाले सिद्धांत ही चाहते हैं, हम सर्वत्र सभी क्षेत्रों में मनुष्य बनाने वाली शिक्षा ही चाहते हैं। केवल मनुष्यों की आवश्यकता है। अन्य सबकुछ हो जाएगा, किंतु आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धा संपन्न और अंत तक कपटरहित नवयुवकों (उत्साही कार्यकर्ताओं) की। ऐसे सौ नवयुवकों से संसार के सभी भाव बदल दिए जा सकते हैं।

उठो, साहसी बनो, वीर्यवान होओ, सब आवश्यक उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लो। यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो, वह सब कुछ तुम्हारे भीतर विद्यमान है। वीरो! यह विश्वास रखो कि तुम्हीं सब कुछ हो, महान कार्य करने के लिए इस धरती पर आए हो। गीदड़-घुड़कियों से भयभीत मत हो जाना। चाहे वज्र भी गिरे तो भी निडर होकर खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना।

तुम रोते क्यों हो? तुम्हीं में तो सारी शक्ति सन्निहित है। अपनी-अपनी सर्वशक्ति संपन्न मानव प्रकृति को उद्बुद्ध करो, तुम देखोगे कि यह सारी दुनिया तुम्हारे पैरों पर लोटने लगेगी। आज देश को आवश्यकता है, साहस और वैज्ञानिक प्रतिभा की। हम चाहते हैं प्रबल पराक्रम, प्रचंड शक्ति और अदम्य साहस। पीछे देखने का काम नहीं, आगे! आगे! बढ़े चलो। हम चाहते हैं अनंत शक्ति, असीम उत्साह, अटूट साहस और अविचल धैर्य, तभी महान कार्य संपन्न होंगे।

आत्मविश्वास रखो। तुम्हीं लोग तो पूर्वकाल में ऋषि-मुनि आदि थे। अब केवल शरीर बदलकर आए हो। मैं दिव्य चक्षुओं से देख रहा हूँ, तुम लोगों में अनंत शक्ति है। उस शक्ति को जाग्रत करो। अरे! मृत्यु जब अवश्यंभावी है, तो कीट-पतंगों की तरह मरने की बजाय, वीरों की तरह मरना अच्छा है। इस अनित्य संसार में दो दिन अधिक जीवित रहकर भी क्या लाभ? 'इट इज बैटर टू वियर आउट दैन टू रस्ट आउट' (जंग लगकर समाप्त होने से अच्छा है, उपयोगी बनकर घिस जाना) जराजीर्ण होकर थोड़ा-थोड़ा क्षीण होकर मरने की बजाय, वीरों की तरह दूसरों के थोड़े-से कल्याण के लिए भी लड़कर उसी समय मर जाना क्या अच्छा नहीं है?

उत्साह से हृदय भर लो, सब जगह फैल जाओ। नेतृत्व करते समय सबके दास बन जाओ। निःस्वार्थ होओ और कभी एक मित्र को पीठ पीछे दूसरे की निंदा करते मत सुनो। अनंत धैर्य रखो, सभी सफलता तुम्हारे हाथ आएगी। सतर्क रहो, जो कुछ असत्य है, उसे पास न फटकने दो। सत्य पर डटे रहो, बस तभी हम सफल होंगे। शायद समय थोड़ा अधिक लगे, पर हम सफल अवश्य होंगे। इस तरह काम करो कि मानो तुम में से हर एक के ऊपर सारा काम निर्भर है। भविष्य की सदियाँ तुम्हारी ओर ताक रही हैं, भारत का भविष्य तुम पर निर्भर है।

तुम में से हर एक को महान होना होगा-होना ही होगा। यदि तुम में आदर्श के लिए आज्ञापालन, तत्परता और प्रेम, यह तीन बातें बनी रहें तो तुम्हें कोई रोक नहीं सकता।

भारतमाता अपनी उन्नति के लिए अपनी श्रेष्ठ संतानों का पराक्रम चाहती है। जो सच्चे हृदय से भारतीय कल्याण का व्रत ले सकें तथा उसे ही जो अपने जीवन का एकमात्र कर्तव्य समझें, ऐसे नवयुवकों के साथ कार्य करते रहो। उन्हें जाग्रत करो, संगठित करो तथा उनमें त्याग का मंत्र फूँक दो। भारतीय युवकों पर ही यह कार्य संपूर्ण रूप से निर्भर है।

तुम काम में लग जाओ, फिर देखोगे कि इतनी शक्ति आएगी कि तुम उसे सँभाल नहीं पाओगे। दूसरों के लिए रत्तीभर काम करने से भी भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिए रत्ती भर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह का-सा बल आ जाता है। तुम लोगों से इतना प्यार करता हूँ, परंतु यदि तुम लोग दूसरों के लिए परिश्रम करते-करते मर भी जाओ, तो यह देखकर मुझे प्रसन्नता होगी। □

युवा आंदोलन अश्वमेध
जैसा ही महत्त्वपूर्ण है। यह बीज
बोने वाला कार्य है, जिससे
संस्कृति की फसल उगेगी।
वरिष्ठों को सूझबूझ से इसकी
सुरक्षा और खाद-पानी की
व्यवस्था बनानी है।

साहसी चलने वाले

मंजिल तक चलते ही रहना सतत, साहसी चलने वाले,
रुक मत जाना पुण्य पंथ में चाहे जितने शूल पड़े हों।

साहस की परिभाषा, केवल बिना रुके चलना होता है,
तूफानों में सूरज जैसा बिना बुझे जलना होता है।
सत्य धर्म और भक्ति मार्ग पर चलकर जो मंजिल पाता है,
सत्य प्रयास में जो मिट जाता, विश्व उसी का यश गाता है।
सच्चे मन से, सच्चे मानव, मानवता पर मिटने वाले,
रुक मत जाना पुण्य पंथ में चाहे जितने शूल पड़े हों।

महाबली मानव ने जल, थल, नभ को जीता, जग जीता है,
दुष्कर्मों से किंतु, वही दुःख के अगणित ओर पीता है।
आओ मिलकर भूख, गरीबी और बीमारी को झुठला दें,
मानव-मानव, भाई-भाई सबसे बड़ी यही गीता है।
लाज छोड़कर दीन-दुःखी पतितों को गले लगाने वाले,
रुक मत जाना पुण्य पंथ में चाहे जितने शूल पड़े हों।

नवयुग की पावन बेला में, नव निर्माण करेंगे साथी,
भूले-भटके मानव मन में, सात्विक भाव भरेंगे साथी।
अंधकार अज्ञान मिटेगा, मानवता की पूजा होगी,
सतयुग को आना ही होगा, सब मिल कार्य करेंगे साथी।
स्वार्थ छोड़, परमार्थ मार्ग पर दुख-सुख सहते चलने वाले,
रुक मत जाना पुण्य पंथ में चाहे जितने शूल पड़े हों।

—वेदप्रकाश अग्रवाल

जागो शक्तिमान युवाओ

मनुष्य क्या है ? एक पानी का बुलबुला, पर जीवन अनंत है । उसे एक बार तुम्हारे रूप में प्रकट होने का अवसर मिला है, कहीं तुम चूक तो नहीं रहे हो ? प्रकट होने दो दिव्यता को पूरी गरिमा के साथ । ऋषियों की संतानो ! भारतमाता के लाड़ले सपूतो ! तुम महान हो, अमृतत्व ही तुम्हारा परिचय है, उठो और लक्ष्य की ओर बढ़े चलो । जमाना तुम्हें उठते देखना चाहता है, अपनी रोनी सूरत को उतार फेंको, मुस्कराओ कि दुनिया में उल्लास भर उठे, खिलो कि जग खिलखिला पड़े, वेदों की ऋचाएँ और उपनिषदों के चिंतन की निर्झरणी तुम्हारे भीतर से फूटे, प्रवाहित होने दो जीवन गंगा को जन-जीवन के ताप-संताप मिटाने । अमृत पुत्रो ! तुम्हारे जीवन की हवा को प्राण बाँटने दो ।

“तुम न जगोगे कौन जगोगा-स्वर्ग धरा को कौन करेगा ।”

महानाश का शंख बजाती असुरता सिर पर आज चढ़ी है, समूची मानवता विकल है और मानव अनास्था की सघन तमिस्रा में डूबा हुआ है, अतः उठो ! और काट दो भव-बंधनों को तथा राष्ट्र के हित समर्पित हो जाओ । जमाना तुम्हारी गौरवगाथा स्वर्ण अक्षरों से लिखने हेतु प्रतीक्षारत है, बिकाऊ मत बनो, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रतिभा को इसलिए मत बढ़ाओ कि तुम्हारा अच्छा मूल्य मिल सके । तुम्हारा जन्म तो इस भू पर दैवी योजना के तहत हुआ है, तुम बाँटने के लिए आए हो, बिकने और भोगने के लिए नहीं, तुम अपने भाग्य के विधाता स्वयं हो । ऋषियों की संतानो ! हमेशा की तरह एक बार फिर तुम्हारे जागरण और नवोन्मेष की जगत को आवश्यकता आन पड़ी है ।

“उठो चेतना के नए गीत गाओ-बढ़ो नव सृजन का संदेशा सुनाओ”

जब तुम जागोगे, देव बनोगे तो यही धरा स्वर्गधाम-सी गौरवमयी बनेगी। तुम्हारा जन्म ही इस चंदन-सी माटी में हुआ है। फैलने दो अपने सत्कर्मों की सुगंध को दशों दिशाओं में, उसे रोको मत। वेदों में कहा है-बलशाली, स्वस्थ, तीव्र मेधा वाले और उत्साही युवा ही ईश्वर के पास पहुँचते हैं। तेजस्वी वीरो! तुम्हारे भविष्य को निश्चित करने का यही समय है।

“अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो”

इतिहास साक्षी है कि युवकों की शक्ति, साहस और अदम्य ऊर्जा ने संकल्प बल के सहारे सदैव नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। राणा, शिवा, भगतसिंह और झाँसी की रानी के वक्त का मंत्र पढ़ो। अब इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए चाहिए तुम्हारे समग्र जीवन का रूपांतरण।

“उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत”

(उठो, जागो और तब तक रुको मत, जब तक लक्ष्य तक न पहुँच जाओ।) □

जिस प्रकार परिवार में सबसे छोटे पर सबसे अधिक खर्च होता है और उनका ध्यान भी रखना पड़ता है, उसी प्रकार युवा के संदर्भ में भी सोचना होगा।

अच्छा जीवन, अच्छे विचार

- अच्छा व्यवहार पाना है तो अच्छा व्यवहार करें।
- अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाएँ।
- सदैव हँसिए एवं दूसरों को हँसाइए।
- किसी के प्रति स्नेह प्रकट करने से न हिचकें।
- विचार उत्तम रखें और छोटी-छोटी खुशियाँ मनाएँ।
- परिचित व्यक्तियों के प्रति सकारात्मक और उत्साही बनें।
- क्षमाप्रार्थी एवं क्षमाशील बनें।
- किसी के अहसान का धन्यवाद देना न भूलें।
- बातचीत में “कृपया” शब्द का अधिक प्रयोग करें।
- मित्रों एवं संबंधियों के जन्मदिन पर शुभकामनाएँ अवश्य दें—
दूसरों का जन्मदिन याद रखें।
- दूसरों का अभिवादन करना न भूलें—पहले अभिवादन, फिर
बात शुरू करें।
- दोषारोपण की आदत छोड़ें, सराहने की आदत डालें।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरदायित्व सँभालें।
- दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहें।
- जीवन की सच्चाइयों को जानें।
- सुखी रहने के लिए स्वयं से प्रेम करें।
- अपनी गलती को अवश्य स्वीकारें, दुबारा न करें।
- किया गया वादा अवश्य पूरा करें।
- हमेशा ईमानदार रहें।
- कहीं भी समय से पहले पहुँचें।
- काम लगन से करें।

- दयालु बनें।
- अपने उपार्जन पर निर्भर रहें।
- प्रेम की शक्ति को कम न समझें।
- पुरानी दोस्ती बनाए रखें, कभी धोखा न दें।
- अपने कार्यस्थल को स्वच्छ रखें।
- ईर्ष्या दुःख की जननी है, इससे बचें।
- कब मौन रहें और कब बोलें, यह जानें।
- फोन पर उत्साह और विनम्रता से बात करें।
- नए विचारों का स्वागत करें।
- उत्कृष्टता और निपुणता के लिए प्रयत्न करें
- अहंकार से बचें।
- सूर्योदय से पूर्व जागें, आत्मबोध की साधना करें, अपने जन्म का उद्देश्य एवं स्वरूप का चिंतन करें, एक दिन का जीवन तथा नया जन्म मानकर उसे सफल बनाने की योजना बनाएँ।
- जिन हाथों से पुरुषार्थ कर अपने भाग्य एवं भविष्य का निर्माण करना है, उनका दर्शन करें।
- जिस धरा पर यश, वैभव, कीर्ति पाना है, उसे प्रणाम करें।
- ताँबे के पात्र में रात्रि से रखा जल पीएँ, उषापान करें, दिन में तीन से चार लीटर पानी पीएँ।
- माता-पिता, गुरुजन तथा बड़ों के चरण छूकर प्रणाम करें।
- शौच, हजामत, मंजन एवं स्नान इत्यादि में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करें। दाँत, आँख, नाक, कान सहित शरीर की ठीक से सफाई करें। स्नान के पूर्व ऋतु अनुसार तेल मालिश करें।
- अपने वस्त्र स्वयं धोएँ।
- प्रातः आधा घंटा गायत्री मंत्र का कैसेट बजाएँ।
- घर में निर्धारित देव स्थान पर पूर्वाभिमुख बैठकर गायत्री उपासना करें। न्यूनतम १०८ मंत्र जप, उगते हुए सूर्य का ध्यान, चालीसा पाठ, शांति पाठ एवं सूर्य को अर्घ्यदान दें।

- तुलसी का नियमित सेवन करें।
- पवनमुक्तासन, प्रज्ञायोग, प्राणायाम नित्य करें।
- अंकुरित अन्न एवं मौसमी फलों का नाश्ता करें।
- चाय-कॉफी त्यागें।
- समय नष्ट न होने दें, समय का प्रबंधन करें।
- कार्यालय, विद्यालय जाने के पूर्व बचे समय को बागवानी, लेखन, पठन, संगीत अथवा सेवा कार्य में लगाएँ।
- निश्चित समय पर मनोयोगपूर्वक शुद्ध सात्विक एवं सुपाच्य भोजन खूब चबा-चबाकर करें। बीच में पानी न पिएँ। मिरच, मसाले, तेल, फास्ट फूड एवं बासे भोजन से बचें। एक घंटे बाद पर्याप्त सादा पानी पिएँ।
- भोजन के पश्चात मूत्र त्याग करें।
- अपने कार्यक्षेत्र को आनंददायक बनाएँ। पूरी तत्परता एवं ईमानदारी से कर्म ही पूजा एवं 'योगः कर्मसु कौशलम्' के भाव से काम करें। परिश्रम सफलता की कुंजी है, अतः श्रम से जी न चुराएँ। आलस्य अत्यंत घातक शत्रु है।
- अपना कार्य स्वयं करने में गौरव मानें, दूसरों पर निर्भरता त्यागें, स्वावलंबी बनें, जब तक संभव हो दूसरों से सहायता न माँगें।
- लोग क्या कहते हैं, इसकी चिंता न करें। क्या किया जाना चाहिए, इस पर विचार करें। नीति, धर्म, मर्यादा एवं संस्कृति के अनुरूप आचरण करें।
- चिंतन को विधेयात्मक (**Positive**) बनाएँ। नकारात्मक चिंतन से बचें।
- छोटे-छोटे खुशी के मौके खोजें और उनका आनंद उठाएँ।
- निरंतर सीखने की वृत्ति विकसित करें। हमेशा कुछ नया (भाषा, कला आदि) सीखने का क्रम बनाएँ।
- जीवन सिर्फ आज है, कल किसने देखा है, अतः काम को कल पर न टालें। □

युवकों से

—राम भरोसे गुप्त 'राकेश'

उठो तुमको धरित्री का नया शृंगार करना है।

उठो तुमको विमल कर्तव्य का भंडार भरना है॥

उठो तुमको नए संकल्प की भेरी बजाना है।

उठो तुमको नए निर्माण के जौहर दिखाना है॥

तुम्हारी बाहुओं में शक्ति का सागर मचलता है।

तुम्हारी गर्जना से भूधरों का दिल दहलता है॥

तुम्हारे कर गहन विस्तार नभ का नाप, लेते हैं।

तुम्हारे पग अतल गहराइयों को भाँप लेते हैं॥

दिखा दो त्याग, की बलिदान की संसार को ज्वाला।

सबल कर में सजालो, सुयश की सम्मान की माला॥

हठीली प्यास रेगिस्तान की मिलकर बुझाओ तुम।

कठिन कर्मण्यता का पाठ जन-जन को पढ़ाओ तुम॥

हटा दो आवरण अब जागरण के गीत गाओ तुम।

युवक हो शुष्क पतझर में नया मधुमास लाओ तुम॥

करो दोनों करों से आज तुम श्रम देव की पूजा।

तुम्हारे सामने है शेष कोई लक्ष्य क्या दूजा?

चलाओ हल कुदाली दैत्य दुष्ट का विष पचा डालो।

स्वयंवर खेत में रानी फसल का तुम रचा डालो॥

अभी आया नहीं है देश में आराम का मौसम।

अभी तो छेड़ना बाकी सभी को काम का सरगम॥

अभी तो कारखानों में नया जीवन जगाना है।

अभी तो खेत में खलिहान में मोती उगाना है॥

अभी करना हिमालय का तुम्हें निज रक्त से तर्पण।

अभी करना तुम्हें निज मातृ-भू को प्राण धन अर्पण॥

अभी तो दाँत हिंसक भेड़ियों के तोड़ना बाकी।

अभी तो आँख खूनी नाग की है फोड़ना बाकी॥

चखा दो शत्रु को इस देश की तलवार का पानी।

नहीं अब तक लुटेरों ने हमारी शक्ति पहचानी॥

युवा शक्ति को प्रेरित एवं सुनियोजित करने का अभियान चले

नई पीढ़ी से अपेक्षाएँ तो हमेशा से की जाती रही हैं और हमेशा की जाती रहेंगी। इन दिनों भी उनसे हर असफलता को सफलता में बदलने की, हर अव्यवस्था को व्यवस्था में बदलने की अपेक्षाएँ की जा रही हैं, लेकिन इस परिवर्तन के लिए उन्हें कुछ दिया जाना चाहिए। इस बारे में घोर उपेक्षा बरती जाती है। यह बात अटपटी भले ही लगे, पर स्वस्थ समीक्षा के क्रम में इसे नकारा या झुठलाया नहीं जा सकता।

उनकी शिक्षा के लिए शिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़ाई जा रही है, लेकिन वे संस्थान अपने मूल प्रयोजन की पूर्ति कितने अंशों में कर पा रहे हैं, इस ओर कोई ध्यान नहीं देना चाहता। उनसे अच्छा जीवन जीने की उम्मीद तो की जाती है, लेकिन जीवन की बारीकियाँ, वास्तविकताएँ उन्हें समझाने के लिए न शिक्षक तैयार होते हैं और न अभिभावक। उनसे संयमशीलता की आशा करने वाले उनके लिए उसके अनुरूप उदाहरण एवं वातावरण प्रस्तुत करने से हमेशा कतराते रहते हैं। उनकी शक्ति का मनचाहा उपयोग कर लेने में सभी को उत्साह है, लेकिन उनका 'मन' ठीक करने में किसी को रस नहीं। आदेश के अनुगमन के लिए उन्हें उपदेश तो बहुत दिए जाते हैं, लेकिन यदि वे उस रास्ते पर चलना चाहें तो उनका साथ देने के लिए कोई तैयार नहीं होता। ऐसे ढेरों उदाहरण सामने दिखाई देते हैं, जिनमें यह कटु सत्य स्वीकार करना है कि नई पीढ़ी से जितनी अधिक अपेक्षाएँ की जाती हैं, व्यावहारिक स्तर पर उनके प्रति उतनी ही उपेक्षा भी बरती जाती है। उनके हित की कामना करने वाले तो बहुत हैं, लेकिन उनके हित के लिए उपयुक्त लोग तैयार नहीं होते। यह अभाव मिटाना होगा, तभी नई पीढ़ी से प्रगति के स्वप्न साकार हो सकेंगे।

कुछ सुनिश्चित सूत्र

युवा शक्ति को दिशाबद्ध करने हेतु कुछ सुनिश्चित सूत्र लेकर चलना पड़ेगा। जो सूत्र परिजनों से गहन विचार-विमर्श के बाद उभरे हैं, वे इस प्रकार हैं—

—हर संगठन में कुछ व्यक्तियों-टोलियों को इस कार्य के लिए चुना, तैयार किया और लगाया जाए।

—विद्यालयों के माध्यम से नई पीढ़ी के साथ सीधा संपर्क बनाना सुगम और प्रभावी हो सकता है। परिजन शिक्षकों, विद्यालय प्रबंध समितियों का सहयोग लेकर अभियान की रूपरेखा बना सकते हैं। अन्य युवा संगठनों के साथ भी तालमेल बिठाएँ।

—आंदोलन का स्वरूप आध्यात्मिक-राष्ट्रीय हो। हर संप्रदाय और वर्ग के युवा को उसके साथ जोड़ा जाए। व्यक्तित्व विकास के चार सूत्र जोड़े जाने का निर्धारण किया गया है।

चार सूत्र-नई पीढ़ी को प्रेरित किया जाना है कि वे (१) स्वस्थ (२) शालीन (३) स्वावलंबी और (४) सेवाभावी बनने का प्रयास करें। इसके लिए नारे दिए जा सकते हैं—

स्वस्थ युवक - सबल राष्ट्र

शालीन युवक - श्रेष्ठ राष्ट्र

स्वावलंबी युवक - संपन्न राष्ट्र

सेवाभावी युवक - सुखी राष्ट्र।

१. स्वास्थ्य

युवाओं को नियमित दिनचर्या, व्यायाम, आहार-विहार के संयम तथा टोली भावना के लिए तैयार किया जाए।

भारतीय संस्कृति समग्र स्वास्थ्य की पक्षधर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने विधेयात्मक स्वास्थ्य को परिभाषित किया है— “यह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तरों पर हितप्रद स्थिति है।” यदि युवा इस प्रकार के स्वास्थ्य के प्रति

जागरूक और प्रयत्नशील रहे तो वह सुखी जीवन का अधिकारी बनेगा तथा राष्ट्र भी हर दृष्टि से सबल/समर्थ हो जाएगा।

अस्तु प्रत्येक युवक यह प्रयास करे कि—

- रहन-सहन, खान-पान, स्वास्थ्य-सिद्धांतों के अनुकूल बने।
- इस दृष्टि से संयमों (इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम) का अभ्यास उत्तरोत्तर बढ़ाता रहे।
- व्यायाम तथा प्रकृति के साथ सहगमन का क्रम बनाए रखें।
- उक्त क्रमों को अपनाने के साथ प्रभाव क्षेत्र के साथियों के जीवन में भी इन्हें प्रविष्ट करने, विकसित करने के प्रयास करें।

२. शालीनता

युवा वर्ग में सज्जनता, सुसंस्कारिता, स्वच्छ मन, निर्व्यसनी होने के सूत्रों का समावेश किया जाए। जीवन में साधना का महत्त्व भी समझाया जाए।

शालीनता के अभाव में शक्तियाँ भटकती-बिखरती और अनिष्टकारी प्रयोजनों में लगती देखी जाती हैं। अस्तु व्यक्ति और राष्ट्र में सामर्थ्य का विकास करने के साथ शालीनता का भी विकास करना जरूरी है।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है—“शालीनता बिना मोल मिलती है, लेकिन उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।” ईश्वर ने मनुष्य में शालीनता के विकास की अनंत संभावनाएँ समाहित कर रखी हैं, उन्हें संकल्पपूर्वक विकसित भर किया जाना जरूरी है।

श्रेष्ठ कर्तव्यों-उत्तरदायित्वों को स्वीकार करते हुए, अपनी शक्तियों-विभूतियों को निरहंकारिता और विनम्रता के साथ उनमें नियोजित होते रहने की प्रवृत्ति को शालीनता कह सकते हैं।

अस्तु प्रत्येक युवक प्रयास करे कि—

- ईश्वरीय चेतना के प्रति जिम्मेदार बने। ईश्वर द्वारा प्रदत्त श्रेष्ठ विभूतियों को जाग्रत्-विकसित करते हुए उन्हें विनम्रतापूर्वक सत्प्रयोजनों में लगाने का अभ्यास साधना स्तर पर करे।

- राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार बने। स्वयं को जाति संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र, पार्टी जैसे वर्ग-भेदों के ऊपर उठाए। राष्ट्र एवं समाज द्वारा प्राप्त अगणित सुविधाओं के प्रति कृतज्ञ भाव रखे। अपने राष्ट्रीय एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन विनम्र भाव से तत्परतापूर्वक करते रहने का अभ्यास विकसित करता रहे।
- स्वयं अपने प्रति जिम्मेदार बने। अपने 'स्व' की महत्ता और गंभीरता को समझे। उसे संकीर्ण स्वार्थी, अनगढ़ प्रवाहों में अटकने-भटकने न दें। पदार्थों को इंद्रियों से, इंद्रियों को मन से, मन को बुद्धि से, बुद्धि को ईश्वरीय चेतना-आत्मचेतना से नियंत्रित-सुनियोजित करने की साधना करता रहे।
- इन सभी प्रक्रियाओं को अपनाते हुए अपने प्रभाव क्षेत्र को भी इसी दिशा में बढ़ाने का प्रयास निष्ठापूर्वक करता रहे।

३. स्वावलंबन

युवाओं को आर्थिक स्वावलंबन के लिए प्रेरित-प्रशिक्षित करना होगा। नौकरी के नाम पर परावलंबन या व्यवसाय के नाम पर अनाप-शनाप मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति का परिशोधन भी किया जाए। उन्हें श्रम का सम्मान, श्रम की सामर्थ्य तथा सृजनात्मक श्रम के लिए तैयार करें। उन्हें सहकारिता एवं प्रामाणिकता का महत्त्व और अभ्यास कराते हुए कुटीर उद्योगों, ग्रामोद्योगों, लघु उद्योगों के लिए प्रशिक्षित करना होगा। आर्थिक स्वावलंबन के साथ समग्र आत्मावलंबन की दिशा में भी प्रेरित किया जा सकता है।

केवल आर्थिक स्वावलंबन अधूरा होता है। समग्र स्वावलंबन के लिए सांस्कृतिक और आर्थिक दोनों ही जरूरी हैं। यह दुनिया विश्व विधाता ने गुण-दोषमय बनाई है। हर क्षेत्र में कुछ श्रेष्ठताएँ और कुछ हीनताएँ रहती हैं। हीनताओं से बचकर श्रेष्ठताओं को चुनने एवं अपनाने में हर व्यक्ति को स्वावलंबी बनना होता है। जिसमें यह प्रवृत्ति विकसित हो, वह हंस की तरह विकारों के बीच से भी संस्कारों को चुनने-अपनाने और उनका लाभ उठाने में सफल हो जाता है। जिसमें यह स्वावलंबन नहीं होता, वह सीखने

के नाम पर लोगों की अनगढ़ नकल करता है। अपने अंदर की और अपने क्षेत्र की विशेषताओं-हीनताओं को समझ न पाने के कारण या परंपरा के नाम पर हीनताएँ भी छाती से चिपकाए रहता है अथवा श्रेष्ठताओं की ओर से भी मुख मोड़ता है। पहली तरह के व्यक्ति अपनों की अनगढ़ नकल करते हैं। दूसरे तरह के व्यक्ति यह मानते हैं कि हमारे पास कोई श्रेष्ठता नहीं, इसलिए विरासत में श्रेष्ठ संस्कृति मिलने पर भी दीन-भूखे-भिखारी की तरह परायी अनगढ़ता-अपसंस्कृति का ही सेवन करने लगते हैं।

जीवन में दो तरह की संपदाएँ होती हैं-एक आंतरिक अलौकिक संपदा और दूसरी बाहरी लौकिक संपदा। जिसे आंतरिक दिव्य संपदा का बोध होता है, वह लौकिक संपदा को मर्यादित अनुशासित रख पाता है। जिसे उसका बोध नहीं, वह स्थूल संपदा के लिए दीवाना होकर स्वयं अमर्यादित हो जाता है।

जो सांस्कृतिक स्वावलंबन की साधना करते हैं, वे अपने क्षेत्र की श्रेष्ठताओं को अपनाते हुए आगे बढ़ते हैं। फिर अन्य संस्कृतियों के साथ भी गरिमामय अभिन्नता स्थापित करते हैं, श्रेष्ठताओं का आदान-प्रदान विवेक और मर्यादापूर्वक कर पाते हैं। अस्तु हर युवा को आर्थिक स्वावलंबन के साथ सांस्कृतिक स्वावलंबन की दिशा में भी बढ़ना चाहिए। स्वावलंबन एक श्रेष्ठ वृत्ति है जो हर दिशा में फलित होती है। जैसे गौरव बोध, मनोरंजन, व्यवहार, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में उसका प्रभाव दिखता है।

गौरव बोध : हर युवक यह अनुभव करना चाहता है कि मैं श्रेष्ठ हूँ। श्रेष्ठता का बोध यदि अपनी संस्कृति की महानता या आंतरिक गुणों के विकास पर है तो व्यक्ति इस संदर्भ में स्वावलंबी हो जाता है, अन्यथा प्रशंसा पाने के लिए बेताब अपने मानवोचित स्तर से गिर जाता है। स्वावलंबी व्यक्ति अपनी राष्ट्रीय संस्कृति के आधार पर चरित्र विकसित करके आत्मगौरव का बोध करता हुआ आगे बढ़ता है तथा अन्य संस्कृतियों की श्रेष्ठताओं से भी व्यक्तियों को विभूषित करके श्रेष्ठ यश का अधिकारी बनता है।

मनोरंजन : स्वावलंबी मानसिकता का व्यक्ति यह निर्णय ले पाता है कि उसे कब, कितनी मात्रा में किस ढंग से मनोरंजन चाहिए। ऐसे व्यक्ति केवल काम बदलकर अथवा अपने परिवार एवं मित्रों के प्रति अपने सामाजिक दायित्व पूरे करके ही मनोरंजन के श्रेष्ठतर लाभ उठा लेते हैं, अन्यथा मनोरंजन के नाम पर समय खराब करने से लेकर अपने चिंतन को भी खराब कर लेते हैं।

व्यवहार : स्वावलंबी प्रकृति के व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति के गुणों, समय की अनुकूलता, अपने नैतिक दायित्वों के बीच संतुलन बिठाकर उचित व्यवहार कर लेते हैं। इसके विपरीत कुछ लोग अन्य व्यक्तियों के व्यवहार से प्रभावित होकर उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप अटपटे व्यवहार करने लगते हैं।

आर्थिक : स्वावलंबी प्रकृति के व्यक्ति अपनी उचित आवश्यकता की पूर्ति के लिए अर्थोपार्जन करते हैं, संयमित जीवन जीते हैं। अनगढ़ लोग अर्थ की अंधी दौड़ में शामिल होकर दूसरों का शोषण और स्वयं को व्यसनों के चक्र में फँसा देते हैं।

आर्थिक स्वावलंबन के लिए जरूरी वृत्तियाँ हैं—

- श्रम के प्रति आदर का भाव (डिगनिटी ऑफ लेबर)।
- श्रम करने की पर्याप्त क्षमता।
- श्रम का सृजनात्मक कौशल।
- सहकारितापूर्वक कार्य करने एवं लेने की प्रवृत्ति।
- अपने उत्पाद एवं तंत्र को प्रामाणिक बनाने की क्षमता।

देखा गया है कि उक्त गुणों के अभाव में अच्छे प्रशिक्षण, पर्याप्त लागत एवं समुचित बाजार (मार्केट) उपलब्ध होने पर भी लोग असफल हो जाते हैं। उक्त प्रवृत्तियाँ होने पर सामान्य स्थिति के लोग भी सहयोग एवं साधनों के सहारे उन्नति कर जाते हैं।

४. सेवाभाव

पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने स्पष्ट लिखा है कि सारी आसुरी प्रवृत्तियों की जड़ संकीर्ण स्वार्थपरता है। इससे

युवा शक्ति को उबारने के लिए उन्हें उदार आत्मीयता के भाव से सेवा परायण बनाने के लिए प्रेरणा, वातावरण एवं अभ्यास दिया जाना नितांत आवश्यक है।

युवावर्ग जोशीला होता है, जोश-खरोश के कार्य अच्छे लगते हैं। इसलिए जहाँ उन्हें उक्त सूत्रों के आधार पर व्यक्तित्व विकास तथा टोली भावना के लिए तैयार किया जाना चाहिए, वहीं उनकी अतिरिक्त ऊर्जा को सुविचारित आंदोलनों में भी लगाना चाहिए।

युवा वर्ग में कार्य करने की क्षमता बहुत होती है। अपनी जरूरत पूरी करके भी पर्याप्त उत्साह एवं कार्य क्षमता शेष रहते हैं। उन्हें यदि लोकहित सेवा में न लगाया जाए तो वे ही व्यसन और उद्वेगता में लगने लगते हैं।

सभी युवकों-युवतियों में सेवाभाव और तत्संबंधी कौशल विकसित किया जाना जरूरी है। इसका आधार है—

- हर युवक द्वारा किया जाने वाला समयदान-अंशदान।
- उन्हें दिशा एवं प्रेरणा देकर उचित कार्यों में नियोजित करने वाले उनके प्रौढ़-मित्र।
- युग निर्माण अभियान के सातों आंदोलनों में से किन्हीं में भी उन्हें लगाया जा सकता है।
- आसपास के सार्वजनिक स्थलों, पार्कों, धर्मस्थलों, गाँवों आदि को अभ्यास के लिए कार्य क्षेत्र बनाया जा सकता है।
- प्रारंभ में उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप कार्य दिए जाएँ। बाद में कार्य के अनुसार रुचि और कौशल को निखारने का भी कार्य किया जा सकता है।

सात आंदोलन—व्यावहारिक सूत्र

हर क्षेत्र में युग संधि महापुरश्चरण के उभरे शक्ति प्रवाह एवं युगऋषि के संरक्षण में की गई जीवन साधना से उभरे व्यक्तित्वों को युग सृजन के, जनकल्याण के कार्यों में तत्काल नियोजित करने का क्रम प्रारंभ किया जा रहा है। हर जगह परिस्थितियों और

उपलब्ध अग्रदूतों के अनुरूप आंदोलनों को गति दी जानी है। किस आंदोलन के लिए क्या-क्या किया जाए? इस संदर्भ में प्रत्यक्ष कार्यक्रमों के सूत्र संकेत प्रस्तुत किए जा रहे हैं। हर संगठित इकाई, अपनी शक्ति का आंकलन करें और तदनु रूप कार्यक्रम हाथ में लें। युवा वर्ग विचार करें कि क्षेत्र में सक्रिय सृजन शिल्पियों द्वारा चलाए जा रहे किन-किन कार्यक्रमों, आंदोलनों को दिशा एवं गति देने के लिए क्या सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं?

साधना आंदोलन

- साधना को संकल्पयुक्त जीवन साधना से जोड़ें।
- सबके लिए सुगम उपासना-साधना, पुस्तक को माध्यम बनाएँ।
- षट्कर्म सहित उपासना काल के कार्यक्रमों की गहराई अनुभूतियों में उतारें।
- शेष दिन के कार्यक्रमों को क्रमशः जीवनचर्या के साथ जोड़ें।
- प्रातः आत्मबोध, रात्रि में तत्त्वबोध की साधना को गहराइयों में प्रवेश कराएँ।

पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई गई विभिन्न ध्यान साधनाओं में से किसी एक को गहराई में उतारने का प्रयास करें।

आत्म समीक्षा करें

व्यक्तिगत-

- उपासना के समय दिव्य चेतना के साथ आदान-प्रदान का सुख, आनंद उभरा?
- अंतः और बाह्य प्रकृतिगत प्रवाहों का सहज बोध बढ़ा?
- आदर्शों को स्वीकारने-साधने में क्षमता कितनी बढ़ी?

सामूहिक-

- परिवार एवं समाज का महत्त्व समझें। सुगम प्रार्थना, व्यवस्थित उपासना और जीवन साधना के लिए प्रेरित, प्रशिक्षित करें।
- समाज के हर वर्ग, हर संप्रदाय के लोगों को उनकी श्रद्धा के अनुरूप उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना एवं जीवन साधना के लिए प्रेरित करें।

- अनजान को जानकारी, जानकारों को प्रेरणा, प्रशिक्षण, साधकों को अगले चरण के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन देते रहने का प्रामाणिक तंत्र बनाएँ।
- सामूहिक साधना प्रशिक्षण सत्र, समीक्षा सत्र लगाएँ।

शिक्षा आंदोलन

- शिक्षा का प्रसार हो।
- परिवार में कोई अशिक्षित न रहे।
- शिक्षा जीवन विद्या के साथ जुड़े।
- विद्यालयों में विचार क्रांति फैले।
- बाल संस्कारशालाएँ बढ़ें, प्रभावी बनें।
- कामकाजी विद्यालय योजना लागू हो, फलित हो।
- स्वयं को जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के लिए प्रेरित, प्रशिक्षित करें।
- शिक्षित युग साहित्य के स्वाध्याय में रुचि लें।
- स्वाध्याय-सत्संग करें, उसे मनन-चिंतन से पचाएँ।
- ज्ञान आचरण में कितना उतरा? समीक्षा करें।
- समाज में शिक्षा, स्वाध्याय की रुचि जगाएँ।
- आंदोलन समूह बनाएँ, विद्यालयों, एवं अन्य क्षेत्रों में पहुँचें।

स्वास्थ्य आंदोलन

- अपने सुख को स्वास्थ्य पर हावी न होने दें।
- स्वास्थ्य के सूत्रों को अभ्यास में लाएँ।
- आहार-विहार, चिंतन-चरित्र, श्रम-विश्राम का संतुलन बनाएँ।
- योग, व्यायाम, प्राणायाम आदि को दिनचर्या में लाएँ।
- संयम एवं जड़ी-बूटी के सहारे चिकित्सा अपनाएँ।
- स्वच्छता सभी स्तरों पर बढ़ाएँ।
- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्यों को समझें, साधें।
- परिवार एवं समाज में उक्त सूत्र लागू करने का प्रयास करें।
- महत्त्व समझाने, प्रशिक्षण एवं सहायता का तंत्र बनाएँ।

- जो जिन परिस्थितियों में रहते हैं, उन्हीं में स्वास्थ्य तथा रोगोपचार के प्रभावी प्रयोग विकसित, लागू करें।
- स्वास्थ्य विशेषज्ञों एवं संपन्नों को जन स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए प्रेरित करें, तंत्र बनाएँ।

स्वावलंबन आंदोलन

- स्वावलंबन की मनोवृत्ति विकसित करें।
- श्रम का सम्मान, श्रम की क्षमता, रचनात्मक श्रम-प्रामाणिकता एवं सहकारिता बढ़ाएँ।
- स्वयं सहायता बचत समूह बनाएँ।
- कुटीर उद्योगों, ग्रामोद्योगों, गोपालन केंद्रों आदि की तकनीक सीखें-सिखाएँ।
- मिशनरी कॉमर्शियल प्रोजेक्ट (पारमार्थिक व्यावसायिक प्रतिष्ठान) का ट्रस्टों, समितियों या व्यक्तिगत स्तर पर विकास करें।
- कमजोर वर्ग का शोषण न होने दें, उनके श्रम और कौशल का लाभ मिले। समझदार और समर्थ उन्हें प्रेरणा-मार्गदर्शन दें।

पर्यावरण आंदोलन

स्थूल—

- प्रकृति के पर्यावरणीय संतुलन (इकोलॉजिकल बैलेन्स) के प्रति आस्था बढ़ाएँ।
- अनगढ़ सुख-व्यसन, फैशन के लिए प्रकृति पर चोट न करें, न होने दें।
- कचरे का निस्सारण (गार्वेज डिस्पोजल)।
- हरीतिमा संवर्द्धन के लिए प्रेरणा, प्रशिक्षण एवं व्यवस्था बनाएँ।
- स्वयं अपनी आदतें सँभालें, परिवार को प्रशिक्षित अभ्यस्त बनाएँ।
- सामाजिक स्तर पर जागरूकता बढ़ाएँ, प्रशिक्षण एवं व्यवस्था तंत्र विकसित करें।

सूक्ष्म—

- हीन भावों, विचारों, संकल्पों और व्यवहारों को निरस्त कर श्रेष्ठताओं का विकास करें, स्थापित-पुष्ट बनाएँ।
- प्रकृति को जड़ नहीं, चेतन ईकाई अपनी माँ जैसा मानें।

व्यसन मुक्ति/कुरीति उन्मूलन

- कुरीतियों, व्यसनों से समय, श्रम, साधन, स्वास्थ्य बचाएँ और सृजन में लगाएँ।
- समझदारों की नासमझी। हर दृष्टि से त्याज्य परंपराएँ क्यों पनप रही हैं? प्रतिष्ठा के चिह्न क्यों बनी हैं?
- विचार क्रांति से बोध कराएँ।
- साधना से संकल्प जगाएँ।
- औषधियों और सामाजिक दबाव का प्रयोग करें, कराएँ।
- महिलाओं-बच्चों को प्रेरित करें, सत्याग्रह करें।
- विद्यालयों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संप्रदायों को प्रेरित, सक्रिय करें।
- व्यसन, कुरीति आदि छोड़ने वालों को सम्मानित करें, उनके लाभों को प्रकाशित करें।
- प्रगतिशील जातीय संगठनों के माध्यम से प्रस्ताव पारित कराएँ और उनका अनुपालन कराएँ।

व्यसन मुक्त युवाशक्ति-मनुष्य की सामर्थ्य अच्छे कार्यों में इसलिए नहीं लग पाती कि वह व्यसनों में नष्ट होती रहती है। युवा वर्ग को नशा-व्यसन से दूर रहने की प्रेरणा के साथ उन्हें उनके प्रतिरोध के लिए भी तैयार करना चाहिए।

संकल्प कराए जाएँ—हम नशा छोड़ेंगे ही नहीं, वरन् अपने प्रभाव क्षेत्र में भी इसका प्रतिरोध करेंगे। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि उपभोक्तावादी तंत्र के धूर्त लोग अपने माल बेचने के लिए नई पीढ़ी की भावनाएँ भड़काकर उन्हें किस प्रकार व्यसनी बनाने पर तुले हुए हैं। कई राष्ट्रों में तो यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय संकट का रूप ले चुकी है। इस दुष्टता से युवाशक्ति को बचाने का

अभियान राष्ट्रीय और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से चलाया जाना आवश्यक है।

नारी जागरण आंदोलन

- नारियों को यह सभी आंदोलन उनके बूते चलाने योग्य विकसित करें।
- नारी को उसके आत्म गौरव का बोध कराएँ, आत्म विश्वास जगाएँ।
- सोने, चाँदी की जंजीरों से नारी को मुक्त कराएँ।
- नारी ही निर्मात्री है, यह विश्वास एवं कौशल जगाएँ।
- बेटे-बेटी को विकास एवं प्यार के समान अवसर-अधिकार दें।
- बेटी-बहू का अंतर मिटे, नारी की नारी के प्रति संवेदना जागे, सहयोग का भाव जागे।
- नारी स्वयं बढ़े। पुरुष बेटी, बहन, पत्नी, माँ आदि को प्रेरित करें। घर के काम हलके करें, विकास के अवसर दें, सहायक बनें।
- क्षेत्रीय नारी संगठन नारी समाज को पीड़ा एवं पतन की स्थिति से उबारने में सक्षम बनें।
- जगह-जगह ऐसे सार्थक आयोजन किए जाएँ, जिनकी पूरी व्यवस्था सक्षम महिलाएँ सँभालें। पुरुष वर्ग अप्रत्यक्ष रूप में सक्रिय सहयोग दें।
- जाग्रत नारी बच्चों में प्रारंभ से ही संस्कार डालें।

आदर्श विवाह आंदोलन-व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज बनने की बात सर्वविदित है। परिवार बनने की शुरूआत विवाह से होती है। यदि श्रेष्ठ व्यक्तियों के संयोग से आदर्श समाज की रचना करनी है तो उसकी नींव आदर्श परिवार के रूप में ही स्थापित करनी पड़ेगी। यदि विवाह लोभ और व्यसन पर आधारित होंगे तो वह नींव ही कमजोर हो जाएगी।

इसलिए युवा शक्ति के बीच आदर्श विवाह आंदोलन चलाया जाना आवश्यक है।

यहाँ केवल दहेज विरोध की बात नहीं कही जा रही है। विवाहोन्माद का एक अंश दहेज की ललक भी है, लेकिन उसके साथ अलन-चलन, चढ़ावा-दिखावा, जश्न के नाम पर अपव्यय जैसे ढेरों रोग जुड़े हुए हैं। विवाहों को इन सबसे मुक्त कराकर, उन्हें एक सुसंस्कार एवं हर्षोल्लास युक्त पारिवारिक उत्सव के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा। युवा पीढ़ी का भविष्य सीधे ही इसके साथ जुड़ा हुआ है। उनमें सुधार परिवर्तन करने का मादूदा भी होता है। युवकों-युवतियों को इसके लिए थोड़े प्रयास से ही तैयार किया जा सकता है।

अभियान चलाने के लिए प्रमुख माध्यम विद्यालयों को बनाया जा सकता है। पहले चरण में उन्हें प्रेरित किया जाएगा। दूसरे चरण में छात्रों एवं अभिभावकों के प्रज्ञामंडल गठित किए जा सकते हैं। उन मंडलों के साथ प्राणवान परिजनों का सतत संपर्क रहे। उनके माध्यम से चर्चाओं, प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण सत्रों, सेवा कार्यों आदि के क्रम चलाए जा सकते हैं।

अगले क्रम में आगे आने वाले छात्रों के लिए योग-व्यायाम, साधना-स्वाध्याय द्वारा जीवन परिष्कार, स्वावलंबन एवं सेवा कार्यों की सुविधाएँ भी जुटानी पड़ेगी। इन सब कार्यों के लिए क्षेत्र के प्रभावी कार्यकर्त्ताओं तथा सहयोगी-संपन्नों का सहयोग लेना होगा। उनका एक व्यवस्थित तंत्र स्थापित करना होगा। जहाँ जैसी परिस्थितियाँ बनें, वहाँ उस ढंग से चरण बढ़ाने के लिए केंद्र से परामर्श भी किया जा सकता है। इस दिशा में सक्रिय अन्य संगठनों का सहयोग भी लिया जा सकता है। □

**युवा चेतना का जागरण अर्थात् राष्ट्र के वर्तमान
और भविष्य को उज्ज्वल बनाना।**

हम युवा शक्ति को दिशा दें

बाल, किशोर और युवा में प्रकृति नित्य नया उत्साह भरती है। यह उत्साह ही उनकी वास्तविक शक्ति होती है। उत्साह का सीधा संबंध रसानुभूति से होता है। जिस दिशा में रस नहीं उभरता, उस दिशा में उत्साह भी टिकता नहीं है। उनके उत्साह को यदि आदर्शों की दिशा में लगाना है तो उनमें आदर्शों में रस लेने का माद्दा भी पैदा करना होगा। रस तो कारणनिरपेक्ष होता है, वह तो भले-से-भले और बुरे-से-बुरे कार्य में भी उभारा जा सकता है। उसका सीधा संबंध कामना और अभ्यास से होता है। जिस तरह के जीवन का हमें अभ्यास हो जाता है, उसी में रस आने लगता है। अबोध अवस्था से जिन्हें मांसाहार की आदत पड़ जाती है, उन्हें उसमें रस आने लगता है। शाकाहारी वातावरण में पले बालक को मांस की गंध से ही उबकाई आती है। रस का दूसरा आधार है कामना। किसी विचार या किसी दृश्य से प्रभावित होकर जो कामना मन में उभरने लगती है उसी में मनुष्य रस लेने लगता है।

यदि नई पीढ़ी की शक्ति को आत्मकल्याण और जनकल्याण की दिशा में लगाना है, तो उसे आदर्शों के अनुपालन का अभ्यास कराना होगा तथा उसके अनुरूप चिंतन एवं उदाहरण प्रस्तुत करके उनके मनों में आदर्शनिष्ठ कामनाएँ जगानी होंगी। ऐसे ही सुयोग आश्रमों-गुरुकुलों में बनाए जाते थे, जिसके प्रभाव से नई पीढ़ी में मानवोचित और देवोपम जीवन जीने की उमंगें उठती रहती थीं और वे वैसे ही बन जाते थे।

अभ्यास या कामनाओं को वांछित दिशा देने के लिए इस पीढ़ी को चाहिए ऐसे व्यक्ति, जो उनके प्रौढ़-मित्र सिद्ध हो सकें। उन्हें भरोसा होना चाहिए कि सामने वाला व्यक्ति हमारे हित और हमारे रस को समझता भी है और उसका निर्वाह भी कर

सकता है। यह भरोसा किसी और के प्रति हो या न हो 'मित्र' के प्रति अवश्य होता है। आज विडंबना यह है कि नई पीढ़ी को मित्र के नाम पर अनगढ़ या स्वार्थी लोग ही मिल पाते हैं, सुगढ़ और समझदारों से उनकी दूरी बढ़ती जा रही है। अनगढ़ और स्वार्थी लोग तो उन्हें भ्रमित रखने में ही खुश रहते हैं। उन्हें दिशा बोध कराने में समर्थ व्यक्तित्वों की एक तो कमी है, दूसरे वे उनके अपने बनकर उन्हें प्रभावित करने के लिए समय नहीं निकाल पाते। युग निर्माणी गायत्री परिजन यदि युवा शक्ति को दिशा देने का युग यज्ञ करना चाहते हैं, तो उन्हें अपने बीच से कुछ ऐसे सुगढ़-आदर्शनिष्ठ व्यक्ति निकालने होंगे, जो नई पीढ़ी के प्रौढ़-मित्रों की भूमिका बखूबी निभा सकें। उनके लिए पर्याप्त समय निकाल सकें तथा पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों के हवाले से अपने जीवन का स्पर्श देकर उनके जीवन की दिशा सँभाल सकें। ऐसे व्यक्ति हर क्षेत्र में उभरने-उभारे जाने चाहिए। □

युवाओं के शारीरिक,
मानसिक एवं आत्मिक विकास
हेतु उनके चिंतन-चरित्र एवं
व्यवहार को परिष्कृत करने हेतु
कार्य योजना बनाई जाए।

युवा आह्वान

उठो! सिंहो! सपूतो!! लाड़लो!!! नवयुग बुलाता है।

निरखती संस्कृति अब उद्धार करने कौन आता है॥

तुम्हीं ने धर्म को हर वक्त मिटने से बचाया है।

चुने दीवार में बच्चे न फिर भी सिर झुकाया है॥

तुम्हीं ने अस्थियाँ दीं और दानवता मिटाई थी।

बढ़ा जब पाप, तो फिर स्वर्ण की लंका जलाई थी॥

बनी है वंदिनी फिर से, सखे! निज संस्कृति-सीता।

निरखती रात-दिन कब मुक्ति का संदेश आता है॥

निरखती संस्कृति अब उद्धार करने कौन आता है॥

भागीरथ हो तुम्हीं, जो ज्ञान की गंगा बहा लाए।

पड़े मृतप्राय थे जो, पुनः उनमें प्राण सरसाए॥

वही है शक्ति, वही है चेतना, वही वीर बना है।

हुई है सुप्त जो सामर्थ्य, बस उसको जगाना है॥

हुई परिव्याप्त जड़ता पुनः, जन-मन में सगरसुत-सी।

उसे श्रम साधना कर, कौन भागीरथ मिटाता है॥

निरखती संस्कृति अब उद्धार करने कौन आता है॥

उठो वीरो! कि तुम को युग नया निर्माण करना है।

सुकृति से, ज्ञान से फिर सभ्यता की माँग भरना है॥

चढ़ा जो रंग पश्चिम का उसे तुम पोंछ डालो प्रिय।

हमारी मान्यताएँ गिर रहीं, उनको सँभालो प्रिय॥

पुनः जीवन नया दो आस्था को, त्याग-निष्ठा को।

बनो वह रवि-जगत के प्राण जो सोए जगाता है॥

निरखती संस्कृति अब उद्धार करने कौन आता है॥

—माया वर्मा

मशाल वंदना

‘ज्ञान की मशाल’ दिव्य चेतना! नमन तुम्हें।
जनहिताय त्याग, तप की साधना नमन तुम्हें ॥

आप हैं ‘विचार क्रांति’ की प्रचंड ज्वाल ही।
सामूहिक संकल्पों की उछाल आप ही।
जन शक्ति-दुर्गा अवतारणा नमन तुम्हें ॥

हमें वह प्रकाश दो, चीर सकें अंधकार।
ज्ञान की ‘लपट’ बनें, भस्म कर सकें विकार।
प्रज्ञा-प्रकाश की उपासना नमन तुम्हें ॥

‘लौ’ लगे लक्ष्य की, प्राण को उछाल दो।
‘ज्वाल’ बनें, प्राणों में वह ऊर्जा डाल दो।
तिलतिल गलने की दो धारणा, नमन तुम्हें ॥

जूझेंगे फिर तम से, संकल्पित होकर हम।
ज्ञान की मशाल थाम संगठित होकर हम।
जनहिताय गलने की प्रेरणा नमन तुम्हें ॥

—मंगल विजय



परिशिष्ट

समग्र क्रांति हेतु युवाओं की तैयारी / ४१

युवाओं के लिए उपयोगी साहित्य

स्वाध्याय की महत्ता

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है—“मानव जीवन में सुख की वृद्धि करने के उपायों में स्वाध्याय एक प्रमुख उपाय है। स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है, मन में महानता, आचरण में पवित्रता और आत्मा में प्रकाश आता है। स्वाध्याय एक प्रकार की साधना है, जो अपने साधक को सिद्धि के द्वार तक पहुँचाती है। जीवन को सफल, उत्कृष्ट एवं पवित्र बनाने के लिए स्वाध्याय की बड़ी आवश्यकता है। स्वाध्याय के अभाव में कोई भी व्यक्ति महान अथवा ज्ञानवान नहीं बन सकता। प्रतिदिन नियमपूर्वक सद्ग्रंथों का अध्ययन करते रहने से बुद्धि तीव्र होती है, विवेक बढ़ता है और अंतःकरण की शुद्धि होती है। इसका व्यावहारिक कारण यह है कि सद्ग्रंथों के अध्ययन करते समय मन उनमें रमा रहता है। ग्रंथ के सद्विचार उस पर संस्कार डालते रहते हैं। वे माता-पिता धन्य हैं, जो अपनी संतान के लिए उत्तम पुस्तकों का एक संग्रह छोड़ जाते हैं, क्योंकि धन, संपत्ति, साधन और सामग्री तो एक दिन नष्ट होकर मनुष्य को अपने भार से डुबो भी सकती है, किंतु उत्तम पुस्तकों के सहारे मनुष्य भवसागर की लहरों में भी सरलता से तैरकर उसे पार कर सकता है।”

ज्ञान मंदिर (पुस्तकालय) स्थापित करें

युगऋषि परमपूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित युवाओं के लिए उपयोगी साहित्य का ज्ञान मंदिर (पुस्तकालय) युवा प्रकोष्ठ संगठन के प्रत्येक शाखा कार्यालय में आपस में धन संग्रह करके अनिवार्य रूप से स्थापित कर लेना चाहिए। सभी युवा भाई-बहिनें स्वयं स्वाध्याय करें व अन्य सभी युवाओं को अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते रहें।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

(१) जीवन देवता की साधना-आराधना २, (२) अपरिमित संभावनाओं का आगार—मानवी मस्तिष्क २१, (३) नीरोग जीवन के महत्वपूर्ण सूत्र ३९, (४) चिर-यौवन एवं शाश्वत सौंदर्य ४२, (५) गायत्री साधना का गुह्य विवेचन १०, (६) सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक सेवा धर्म के उपासक ४५, (७) महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग भाग-१ ५०, (८) प्रेरणाप्रद दृष्टांत ६७, (९) भव्य समाज का अभिनव निर्माण ५४, (१०) मनुष्य में देवत्व का उदय ५४, (११) मनस्विता, प्रखरता और तेजस्विता ५७, (१२) प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा ५१, (१३) विवाहोन्माद : समस्या और समाधान ६०, (१४) राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने? ६४, (१५) सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रांति कैसे हो? ६५, (१६) युग निर्माण योजना का दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम ६६, (१७) समाज का मेरुदंड सशक्त परिवार तंत्र ४८, (१८) गृहस्थ एक तपोवन ६१, (१९) इक्कीसवीं सदी : नारी सदी ६२, (२०) हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण ६३, (२१) साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान ४, (२२) व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ २०, (२३) सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भाग-१ २८, (२४) सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भाग-२ २९।

उपरोक्त प्रत्येक वाङ्मय का मूल्य १२५)०० रुपए है। पूरा सैट २४ वाङ्मय का ३०००)०० रुपया है। युवा प्रकोष्ठ के लिए विशेष छूट के साथ २४००)०० रुपए में भेजा जाएगा। २४ उदार दानी, समर्थ भाइयों से १००-१०० रुपए एकत्र करके ड्राफ्ट द्वारा भेजकर मँगा सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित युवकों के लिए उपयोगी साहित्य

१. गायत्री विद्या की चौबीस अक्षरों की प्रेरणा देने वाली चौबीस पुस्तकों का सैट, २. गायत्री दैनिक साधना, ३. गायत्री प्रार्थना, ४. महाकाल का युवा शक्ति को आह्वान, ५. वर्तमान चुनौतियाँ और युवा वर्ग।

क्रांतिधर्मी युग परिवर्तनकारी साहित्य

(प्रज्ञावतार पूज्य गुरुदेव द्वारा महाप्रयाण से पूर्व रचित

युग परिवर्तन हेतु क्रांतिकारी साहित्य)

१. इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य भाग-१, २. इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य भाग-२, ३. युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-प्रथम भाग, ४. युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-द्वितीय भाग, ५. सतयुग की वापसी, ६. परिवर्तन के महान् क्षण, ७. जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र, ८. प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया, ९. नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी, १०. समस्याएँ आज की समाधान कल के, ११. मनःस्थिति बदलें तो परिस्थिति बदले, १२. स्रष्टा का परम प्रसाद प्रखर प्रज्ञा, १३. आद्य शक्ति गायत्री की समर्थ साधना, १४. शिक्षा ही नहीं, विद्या भी, १५. संजीवनी विद्या का विस्तार, १६. भाव संवेदनाओं की गंगोत्री, १७. महिला जागृति अभियान, १८. जीवन देवता की साधना-आराधना, १९. समयदान ही युग धर्म, २०. नवयुग का मत्स्यावतार, २१. इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण, २२. युग की पुकार अनसुनी न करें, २३. युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम, २४. सृजन सैनिकों के संगठन की रीति-नीति, २५. संजीवनी विद्या, २६. इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा? २७. क्रांति की रूपरेखा, २८. महाक्रांति का शंखनाद, २९. महाकाल का संदेश, ३०. यह बोल रहा है महाकाल।

युग निर्माण सेट

(युग सृजन हेतु पूज्य गुरुदेव का क्रांतिकारी चिंतन)

१. विचारक्रांति की आवश्यकता एवं उसका स्वरूप, २. स्वाध्याय, सत्संग और चिंतन-मनन, ३. महाकाल और युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया, ४. परमार्थ में ही स्वार्थ भी है, ५. समझदारों की नासमझी, ६. सदाचरण और मर्यादा पालन, ७. गरीबी भगाएँ गरिमा बढ़ाएँ, ८. भाषण एवं जन गायन की प्रक्रिया, ९. हम बदलें, तो दुनिया बदले, १०. लोकमानस का परिष्कृत मार्गदर्शन, ११. इक्कीसवीं सदी का संविधान (सत्संकल्प)।

स्वास्थ्य एवं वनौषधि

१. समग्र स्वास्थ्य संवर्धन कैसे? २. घरेलू चिकित्सा, ३. बिना औषधियों के कायाकल्प, ४. निरोग जीवन का राजमार्ग, ५. चिरयौवन का रहस्योद्घाटन, ६. स्वास्थ्य रक्षा प्रकृति के अनुसरण से ही संभव, ७. सात्विक जीवनचर्या और दीर्घायुष्य, ८. प्राणायाम से आधि-व्याधि निवारण, ९. आसन-प्राणायाम से आधि-व्याधि निवारण, १०. प्राण चिकित्सा विज्ञान, ११. असंयम बनाम आत्मघात, १२. आसन और प्राणायाम, १३. विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण, १४. जल्दी मरने की उतावली न करें, १५. स्फूर्ति और मस्ती से भरा बुढ़ापा, १६. पाँच तत्त्वों द्वारा संपूर्ण रोगों का निवारण, १७. मसाला वाटिका से घरेलू उपचार, १८. जड़ी-बूटी चिकित्सा एक संदर्शिका, १९. जड़ी-बूटी द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन, २०. जड़ी-बूटियों की व्यावसायिक खेती, २१. गमलों में स्वास्थ्य, २२. प्रज्ञा अभियान का योग व्यायाम, २३. तुलसी के चमत्कारी गुण, २४. पंचगव्य चिकित्सा, २५. सूर्य चिकित्सा विज्ञान, २६. स्वस्थ रहने की कला, २७. अक्षुण्ण स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु एक शाश्वत राजमार्ग।

शिक्षा एवं स्वावलंबन

(शिक्षा एवं स्वावलंबन पर सृजनात्मक व्यावहारिक मार्गदर्शन)

१. शिक्षा और विद्या का सार्थक समन्वय, २. शिक्षा ही नहीं विद्या भी, ३. सार्थक एवं समग्र शिक्षा का स्वरूप, ४. शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन, ५. प्रबन्ध व्यवस्था एक विभूति, एक कौशल, ६. व्यवस्था बुद्धि की गरिमा, ७. विद्यालयों में संस्कृति मंडलों का गठन, ८. छात्रों की कार्य योजना, ९. बाल संस्कार शालाएँ इस तरह चलें, १०. शिक्षक संदर्शिका, ११. छात्रों का निर्माण अध्यापक करें, १२. राष्ट्र के अर्थतंत्र का मेरुदंड गौशाला, १३. जयति जय गोमाता, १४. आर्थिक स्वावलम्बन, १५. ग्रामोत्थान की ओर, १६. केंचुआ खाद (वर्मी कल्चर) संदर्शिका, १७. फोटो लेमिनेशन गाइड, १८. प्रगतिशील स्वावलंबन, १९. गोवंश आधारित कृषि, २०. गावः सर्वसुखप्रदा।

व्यक्ति निर्माण

(मानव को महामानव बनाने का प्रेरणा प्रोत्साहन)

१. व्यक्तित्व के परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ, २. परिष्कृत व्यक्तित्व एक सिद्धि एक उपलब्धि, ३. संकल्प शक्ति की प्रचण्ड प्रक्रिया, ४. मन के हारे हार है मन के जीते जीत, ५. प्रगति की प्रसन्नता की जड़ें अपने ही भीतर, ६. मानव जीवन की गरिमा, ७. प्रखर प्रतिभा की जननी इच्छाशक्ति, ८. दो महान अवलंबन— आत्मविश्वास, ईश्वरविश्वास, ९. सिद्धिदात्री वाक् साधना, १०. जीवन लक्ष्य और उसकी प्राप्ति, ११. सुख चाहें तो यों पाएँ, १२. जीवन जीने की कला, १३. जीवन की श्रेष्ठता और सदुपयोग, १४. ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता, १५. समय का सदुपयोग करें, १६. सफल जीवन के कुछ स्वर्णिम सूत्र, १७. मानव जीवन एक बहुमूल्य उपहार, १८. सेवाधर्म और उसका

स्वरूप, १९. अंतरंग का देवासुर संग्राम, २०. बड़े आदमी नहीं
महामानव बनें।

परिवार निर्माण

(सुसंस्कृत परिवार के निर्माण में उपयोगी साहित्य)

१. परिवार निर्माण की उपयोगिता समझी जाये, २. परिवार और उसका निर्माण, ३. परिवार निर्माण की विधि-व्यवस्था, ४. संयुक्त परिवार के संयुक्त उत्तरदायित्व, ५. घर-परिवार भी एक शरीर है, ६. परिवारों में सुसंस्कारिता का वातावरण, ७. परिवार को सुव्यवस्थित कैसे बनाएँ, ८. नर रत्नों की खान सुसंस्कृत परिवार, ९. गृहस्थ जीवन एक तपोवन, १०. गृहस्थ एक योग साधना, ११. गृहस्थ में प्रवेश के पूर्व जिम्मेदारी, १२. सफल दाम्पत्य जीवन के मौलिक सिद्धांत, १३. घर के वातावरण में स्वर्ग का अवतरण, १४. अभिभावकों व संतानों के बीच भावनात्मक आदान-प्रदान, १५. बच्चों की शिक्षा ही नहीं विद्या भी, १६. बच्चों के शासक नहीं सहायक बनें, १७. विवाहित जीवन का अलौकिक आनंद, १८. सद्भाव और सहकार पर ही परिवार संस्था निर्भर, १९. बालकों का भावनात्मक विकास, २०. सुसंस्कारिता की प्राथमिक प्रयोगशाला-परिवार संस्था, २१. पारिवारिक जीवन की समस्या, २२. युग सृजन का आरंभ परिवार निर्माण से, २३. बच्चे बढ़ाकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मारें, २४. सार्थक एवं आनंदमय वृद्धावस्था।

समाज निर्माण

(सभ्य समाज के निर्माण हेतु प्रगतिशील चिंतन)

१. रुग्ण समाज और उसका कायाकल्प, २. विवाह यज्ञ है इसे उद्धत उत्पात न बनायें, ३. विवाह यज्ञ है इसमें दुष्टता-भ्रष्टता न जोड़ें, ४. विवाह संस्कारों में विकृतियाँ न जोड़ें, ५. दो घिनौने मुफ्तखोर व कामचोर, ६. सेवा साधना और उसके सिद्धांत, ७. मृतक भोज की क्या आवश्यकता।

व्यसन मुक्ति एवं पर्यावरण

(व्यसन मुक्त समाज एवं संतुलित पर्यावरण बनाने का मार्गदर्शन)

१. तंबाकू एक भयानक दुर्व्यसन, २. प्राणघातक व्यसन,
३. युगधर्म-पर्यावरण संरक्षण, ४. विज्ञान को शैतान बनने से रोके,
५. वृक्षारोपण एक पुनीत पुण्य, ६. बिना मोल आफत—दुर्व्यसन।

नारी जागरण

(नारी वर्ग को प्रगतिशील बनाने का प्रेरणा भरा दिग्दर्शन)

१. नारी उत्थान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता, २. नारी उत्थान की समस्या और समाधान, ३. शिक्षित नारी आगे आयें अपने वर्ग को ऊँचा उठायें, ४. नारी श्रृंगारिकता नहीं पवित्रता है,
५. नारी को रमणी न मानें जननी का सम्मान दें, ६. जागो शक्ति स्वरूपा नारी, ७. नारी की महानता, ८. प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ।

अन्य साहित्य

१. ऋषि चिंतन के सान्निध्य में, २. शक्तिवान बनिए,
३. उत्तिष्ठ जाग्रत, ४. बोलती दीवार अभियान, ५. हारिए न हिम्मत,
६. बोलती दीवारें, ७. हमारी वसीयत-विरासत, ८. श्रम-सुख का सेतु, ९. वेशभूषा शालीन रखिए।

